भूदान-यज्ञ

भूदान-यज्ञ मूलक ग्रामोद्योग प्रधान अहिंसक क्रान्ति का सन्देशवाहक– साप्ताहिक

सर्व सेवा संघ का मुख पत्र

वर्ष : १५ अंक : २१

सोमवार २४ फरवरी, '६९

अन्य पृष्ठों पर

दिवंगत ईश्वरलाल भाई
—मनमोहन चौधरी २५८

ये चुनाव और हम —सम्पादकीय २५९

चांद की परिक्रमा और ग्रामदान-तूफान
—मनमोहन चौधरी २६०

गाँव लोकसत्ता की सबल इकाई कैसे बने ? —हेमनाथ सिंह २६२

आंदोलन के समाचार २६३

परिशिष्ट
"गाँव की बात"

मृत्यु ईश्वर की देन है। जब हमारे निकटतम नातेदार, मित्र, विशेषज्ञ कोई भी हमें दुःखों से नहीं बचा पाते, तब मृत्यु ही छुटकारा देती है। मृत्यु में जो दुःख माना जाता है, वह वास्तव में जीवन का दुःख है। रोगादि से होनेवाला दुःख मृत्यु का नहीं, जीवन के असंयम का फल है। मृत्यु तो उनसे हमें छुटकारा दिलानेवाली है। मृत्यु का उनसे कोई सम्बन्ध नहीं है। —विनोबा

सम्पादक
राममूर्ति

सर्व सेवा संघ प्रकाशन
राजघाट, वाराणसी–१, उत्तर प्रदेश
फोन : ४२८५

जितनी अहिंसा उतना ही स्वाधीनता

सारा समाज अहिंसा पर उसी प्रकार स्थित है, जिस प्रकार गुरुत्वाकर्षण से पृथ्वी अपनी स्थिति में बनी हुई है। लेकिन जब गुरुत्वाकर्षण के नियम का पता लगा उस समय इस शोध के ऐसे परिणाम निकले, जिसके बारे में हमारे पूर्वजों को कोई ज्ञान नहीं था। इसी प्रकार जब निश्चित रूप से अहिंसा के नियमानुसार समाज का निर्माण होगा, तो उसका ढाँचा खास-खास बातों में आज से भिन्न होगा।...

आज तो अहिंसा के नियम की उपेक्षा करके हिंसा को सिंहासन पर बैठा दिया गया है, मानो वही जीवन का शाश्वत नियम हो।...

मैं यह मानता हूँ कि अहिंसा को राष्ट्रीय पैमाने पर स्वीकार किये बिना वैधानिक या लोकतांत्रिक शासन जैसी कोई चीज नहीं हो सकती, इसलिए अपनी शक्ति को मैं इस बात का प्रतिपादन करने में लगाता हूँ कि अहिंसा हमारे व्यक्तिगत, सामाजिक, राजनीतिक, राष्ट्रीय और अन्तर्राष्ट्रीय जीवन का नियम है।...

मैं अकसर यह कहता रहा हूँ कि अगर साधनों की सँभाली रखी जाय, तो साध्य अपनी चिन्ता खुद कर लेगा। अहिंसा साधन है और साध्य हरेक राष्ट्र के लिए पूर्ण स्वतंत्रता। अन्तर्राष्ट्रीय संघ तभी स्थापित होगा जब कि उसमें शामिल होनेवाले बड़े-छोटे राष्ट्र पूरी तरह स्वाधीन हों। जो राष्ट्र अहिंसा को जितना हृदयंगम करेगा उतना ही वह स्वाधीन होगा।

एक बात निश्चित है। अहिंसा पर आधार रखनेवाले समाज में छोटे-से-छोटे राष्ट्र भी बड़े-से-बड़े राष्ट्र के समान ही रहेंगे। बड़ेपन और छोटेपन का भाव सर्वथा मिट जायेगा।

...इस प्रकार अपने-आप यह परिणाम निकलता है कि जब तक अहिंसा को केवल नीति के बजाय एक जीवित शक्ति अर्थात् अटूट ध्येय के रूप में स्वीकार न कर लिया जाय, तबतक वैधानिक या लोकतांत्रिक शासन एक दूर का स्वप्न ही रहेगा। मैं विश्वव्यापी अहिंसा का हिमायती हूँ, परन्तु मेरा प्रयोग हिन्दुस्तान तक ही सीमित है। यहाँ उसे सफलता मिली तो संसार बिना किसी प्रयत्न के उसे स्वीकार कर लेगा।...विघ्नों की मुझे चिन्ता नहीं है। घोर अन्धकार के बीच भी मेरा विश्वास उज्ज्वलतम बना रहता है।[1]

अहिंसक स्वराज्य में न्यायपूर्ण अधिकारों का किसीके भी द्वारा कोई अतिक्रमण नहीं हो सकता और इसी तरह किसीको कोई अन्यायपूर्ण अधिकार नहीं हो सकते। सुसंगठित राज्य में किसीके न्याय्य अधिकार का किसी दूसरे के द्वारा अन्यायपूर्वक छीना जाना असम्भव होना चाहिए और कभी ऐसा हो जाय तो अपहर्ता को अपदस्थ करने के लिए हिंसा का आश्रय लेने की जरूरत नहीं होनी चाहिए।[2]

—मो० क० गांधी

(१) 'हरिजन सेवक' : ११–२–'३९ : पृष्ठ–४१८-४१९
(२) 'हरिजन' : २५–३–'३९ : पृष्ठ–६५।

www.vinoba.in

दिवंगत ईश्वरलाल भाई

ईश्वरलाल भाई भारतीय सेवकत्व के प्रतीक थे। वे पैदा हुए थे भारत के पश्चिम

ईश्वरलाल भाई

किनारे पर गुजरात में, पर अपना सेवामय जीवन बिताया उसके पूरबी किनारे पर उड़ीसा में। बचपन और जवानी के ३० साल गुजरात में बिताये तो परिपूर्ण सेवक-जीवन के ४१ साल उड़ीसा में। बापू ने उन्हें सन् १९२८ में उड़ीसा भेज दिया था सेवा करने के लिए। ईश्वरलाल भाई मजाक में कहा करते थे कि बापू ने कहा था कि जाओ, वहाँ महीने भर रह करके देखो, तो तीस दिन के तीस साल हो गये।

विनोबा के साथ

वे विरमगाम में पैदा हुए थे। जवानी में व्यापार-धन्धे में लगे थे। पर सेवा की प्रेरणा हृदय में पैदा हुई और बापू के पास पहुंचे, और बापू ने उनको जीवन की दिशा दे दी।

वे उड़ीसा आये उससे पहले ही उनकी पत्नी का देहान्त हो चुका था। उनका कोई परिवार नहीं था। पर उत्कल के सारे सर्वोदय-कार्यकर्ता उनके परिवार के बन गये थे। उनकी स्नेहशीलता उनका सर्वोत्तम गुण था। और यही कारण था कि प्रान्त के हजारों कार्यकर्ता तथा गृहस्थों को उन्होंने अपना बनाया था और उन सबने भी उनको अपने परिवारों में शामिल कर लिया था। वे बड़ों के भाई, तो कइयों के बापा तथा छोटों के और बच्चों के प्यारे जेजे (नाना) थे। उनके चेहरे पर से कभी प्रसन्नता की मुद्रा मिटती नहीं थी। जहाँ भी वे पहुंचते थे, अपनी प्रसन्नता के प्रकाश से सारे वातावरण को उज्ज्वल कर देते थे। निराशा और मायूसी तो उनके सामने टिकती ही नहीं थी।

वे शुरू में ऐसे दूर के देहात में जा बैठे, जहाँ पहुँचने के लिए उन दिनों बीसों मील चलना पड़ता था। पहाड़, जंगल या बाढ़ से घिरा हुआ प्रदेश, कोई भी उनके लिए दुरधिगम्य नहीं था। हिम्मत भी गजब की थी। एक बार राउरकेला में रेल की पटरी पर गिरकर उनकी घुटने की हड्डी टूट गयी। समाचार पाकर उनकी देखभाल के लिए कटक से एक साथी रवाना ही हो रहे थे तो देखते हैं कि ईश्वरलाल भाई ३०० मील की मोटर-बस की यात्रा करके कटक पहुँच गये हैं।

चालीस साल में उत्कल के रचनात्मक कार्य तथा सर्वोदय-आन्दोलन के साथ वे इस तरह से ओतप्रोत हो गये थे कि उनके बिना किसी भी प्रवृत्ति की कल्पना करना असम्भव था। कठिन-से-कठिन जिम्मेदारी संभालने में वे हिचकिचाते नहीं थे और कितना भी कष्ट उठाकर जिम्मेदारी पूरी करते थे। उन्होंने हरिजनों के मुहल्ले में बैठकर चरखा चलवाया है और बीहड़ आदिवासी-क्षेत्र में अकाल-पीड़ितों को अन्न बाँटा है। गाँव-गाँव, घर-घर घूमकर भूदान प्राप्त किया है और अनाथ बच्चों के लिए बालाश्रम चलाया है। वे उत्कल में सर्वोदय-आन्दोलन के अनन्यतम आधार-स्तम्भ थे और खास करके आन्दोलन की आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करने का भार अपने कन्धों पर उठा रखा था। अखिल भारतीय प्रवृत्तियों के साथ भी उनका संपर्क था। सन् १९५९ में असम के भाषिक उपद्रवों के बाद उन्होंने वहाँ महीनों काम किया था और अपने सदा प्रसन्न और प्रेमपूर्ण स्वभाव से वहाँ के साथियों का तथा जनता का हृदय जीत लिया था।

वे हममें से उठ गये। गांधीजी के जमाने का तपःपूत साधक और सेवकों में से एक और कम हुए। देश के सर्वोदय-परिवार का एक प्रेमी गुरुजन का स्थान रिक्त हुआ। उनका अभाव हमें बरसों तक अखरता रहेगा। पर इसमें शक नहीं कि उन्होंने प्रेम, आशावादिता, धृति, उत्साह, कर्मठता आदि गुणों का जो स्पर्श अनगिनत साथियों को दिया है, वह उनके जीवन में काम करता रहेगा, और उनके तथा समाज के जीवन को समृद्ध करता रहेगा।

—मनमोहन चौधरी

उ० प्र० में ग्रामदान आन्दोलन

ता० ३१-१-१९६९ तक की प्रगति

जिला	ग्रामदान	प्रखण्डदान
१. अल्मोड़ा	८४	
२. टिहरी	६६	
३. गढ़वाल	६१	
४. चमोली	५६६	५
५. उत्तरकाशी	५६६	४
६. पिथौरागढ़	६४	१
७. मेरठ	२२०	
८. मुजफ्फरनगर	२०७	
९. सहारनपुर	३८७	
१०. देहरादून	२३२	१
११. बुलन्दशहर	१५७	
१२. मुरादाबाद	१४६	
१३. शाहजहाँपुर	१	
१४. आगरा	९७९	८
१५. मथुरा	३३२	
१६. अलीगढ़	२३५	
१७. मैनपुरी	७६०	४
१८. एटा	४८१	
१९. झाँसी	१२४	
२०. हमीरपुर	१	
२१. इलाहाबाद	४०	
२२. फतेहपुर	१	
२३. कानपुर	२६५	
२४. इटावा	२	
२५. फर्रुखाबाद	८३५	
२६. उन्नाव	५	
२७. हरदोई	३०६	
२८. रायबरेली	१	
२९. फैजाबाद	२८०	३
३०. गोण्डा	१	
३१. बस्ती	१०५	
३२. गोरखपुर	१८७	
३३. देवरिया	१८४	
३४. आजमगढ़	१,०८७	७
३५. गाजीपुर	४७६	४
३६. बलिया	१,४६६	१८
३७. वाराणसी	१,९७१	२०
३८. मिरजापुर	३७१	३
कुल योग :	१३,२८८	७८

—कपिल भाई

www.vinoba.in

सम्पादकीय

ये चुनाव और हम

सन् १९६९ के चुनावों से यह एक सम्भावना पैदा हो गयी है कि शायद सन् १९७२ में दिल्ली में कांग्रेस का आज की तरह बहुमत नहीं रहे। स्वराज्य के बाद पहली बार इस स्थिति का आभास हुआ है। अगर दिल्ली में भी खिचड़ी और डाँवाँडोल सरकारें बनने लगेंगी तो देश का क्या होगा ? सरकार के न बन सकने, या न चल सकने की हालत में राज्यों के लिए जिस आसानी के साथ राष्ट्रपति-शासन की बात कह दी जाती है, और राष्ट्रपति का शासन लागू भी कर दिया जाता है, वह बात क्या दिल्ली के लिए भी कही जा सकती है ? भारत के लिए संघीय संविधान बनानेवाले हमारे कानून के विशेषज्ञ बुजुर्गों ने क्या सोचा था ? क्या उन्होंने यह मान लिया था कि अनंत काल तक दिल्ली में एक ही दल का शासन रहेगा ? हमारा आज का संविधान बदलती हुई राजनैतिक परिस्थिति का मुकाबिला कैसे करेगा ?

भारत के संविधान की यह मूल कल्पना है कि सरकार उस दल के हाथ में रहे जो स्थायी सरकार बना सके, यानी जिसका बहुमत हो। लेकिन हमारा वोटर दिनोंदिन ज्यादा मजबूती के साथ घोषित करता चला जा रहा है कि वह अपना भविष्य किसी एक दल के हाथ में सौंपने के लिए तैयार नहीं है। अगर संविधान की शर्त को संविधान से अधिकार प्राप्त करनेवाला स्वयं वोटर स्वीकार न करे, और एक से अधिक दल मिली-जुली सरकार न चला सकें, और दलों की संख्या बराबर बढ़ती ही चली जाय, तो राष्ट्र की राजनैतिक व्यवस्था की गुत्थी कैसे सुलझेगी ? देश के सही संदर्भ में मिली-जुली सरकार का शास्त्र और आचार अभी हमने विकसित नहीं किया है। एक दल की सरकार का बनना मुश्किल, और कई दलों की सरकार का चलना मुश्किल : जब दोनों मुश्किल हों तो क्या हो ?

बात यह है कि हमारे वोटर ने एक दूसरी दिशा ही पकड़ ली है। पिछले २० वर्षों में राजनैतिक दलों ने वोटर के दिल से देश को निकालकर अपने को बिठाने की जो संगठित कोशिश की है उसका परिणाम यह हुआ है कि वोटर ने अब दल और देश दोनों को दिल से निकालना शुरू कर दिया है। वह अब दल के प्रभाव को मानने से इनकार कर रहा है। वह व्यक्तिगत उम्मीदवार को देखने लगा है, और यह भी मानने लगा है कि किसी उम्मीदवार की सबसे बड़ी कसौटी यही है कि वह उसकी अपनी जाति का है या नहीं। वोटर की निष्ठाओं में सबसे बड़ी निष्ठा है जाति। इस मध्यावधि चुनाव में सर्वोदय की ओर से हमने उससे कहा था : 'दल और जाति का ध्यान छोड़कर सबसे अच्छे उम्मीदवार को वोट दो।' उसने हमारी इतनी बात तो मान ली की दल का ध्यान बहुत-कुछ छोड़ दिया, लेकिन जाति का ध्यान नहीं छोड़ सका। वह यह नहीं सोच सका कि जाति का ध्यान छोड़ दें तो रखें किस बात का ? बात यह है कि वह यह देख रहा है कि दल चाहे जो हो, जाति ही वह ट्रम्प है जिसे लगाकर हर दल चुनाव की बाजी जीतना चाहता है। देश की निष्ठा कमजोर हो, और दूसरी कोई सबल नयी निष्ठा बनी न हो, तो जाति के सिवाय दूसरा रह क्या जाता है ? दल के लिए गद्दी देश से ऊपर, और वोटर के लिए जाति दल और देश दोनों के ऊपर—इसी 'शास्त्र' पर चुनाव की यह राजनीति चल रही है। कहाँ रह गयी स्वराज्य के दिनों की वह अखिल भारतीयता ? सारी राजनीति क्षेत्रीय और स्थानीय हो गयी है। बड़े दल भी इस चुनाव में सिमटकर क्षेत्र और जाति के घरौंदे में बँध गये, उन्होंने वोटर को भी बाँध दिया। सीमित और संकीर्ण होकर चुनाव लड़ा गया, जीता गया। ऐसी हालत में कैसी होंगी वे सरकारें जो इन तुच्छ निष्ठाओं के आधार पर बनेंगी ?

वोटर क्या चाहता है ? वह सुविधाएँ चाहता है। दल का नाम कोई हो, उसके झंडे का रंग कुछ भी हो, वोटर का ध्यान इस बात पर है कि वह जिसे वोट दे रहा है उससे या तो उसके सवाल हल होने की उम्मीद हो, या गाँव-गाँव में चलनेवाले जीवन-संघर्ष में उसका प्रतिनिधि मददगार सिद्ध हो, इसका भरोसा हो। वास्तव में सामान्य व्यक्ति के लिए जाति के सिवाय दूसरा कोई सहारा नहीं है, और विकास के अत्यंत सीमित अवसरोंवाले समाज की प्रचलित छीना-झपटी में आगे बढ़ने का दूसरा कोई रास्ता नहीं है।

सन् १९५१ से लेकर आज तक हम भूदान-ग्रामदान आन्दोलन में दो बातें कहते आये हैं—एक बात गरीब की, और दूसरी गाँव की। लेकिन न तो गरीब अभी अलग कोई 'समुदाय' बन सका है, और न तो गाँव अपने में कोई 'इकाई'। ऊँची जाति का गरीब गरीब होते हुए भी अपने को ऊँचा मानता है, अपनी जाति के ऊँचे लोगों के साथ अपना हित जोड़ता है। वह नीच गरीब के साथ एकता का अनुभव नहीं करता। इसलिए गरीब स्वयं आपस में एक नहीं हैं। तभी तो एक राजनीति बन गयी है ऊँची जातियों की, दूसरी 'बैकवर्ड' की, और तीसरी 'अछूतों' की, यानी बहिष्कृतों और वंचितों की। इन सबके एक-दूसरे से और आपस में संघर्ष हैं। एक ही गाँव में रहते हुए भी ये तीनों एक नहीं हैं। इसलिए हिन्दू होते हुए भी तीनों राजनीति में अलग होते जा रहे हैं। राजनीति का हिन्दू अब एक नहीं रहा। सम्प्रदाय जातियों में टूट रहा है। या दूसरी दृष्टि से जातियों में बँटा हुआ हिन्दू राजनीति में एक बन नहीं पा रहा है, यद्यपि कोशिश बहुत है बनाने की। सवर्ण जातियाँ अपने स्वामित्व, अपनी प्रतिष्ठा और अपने अधिकार को बनाये रखना चाहती हैं। बैकवर्ड जातियाँ फारवर्ड बनना चाहती हैं। अवर्ण जातियाँ व्यापक कशमकश में अपने लिए स्थान बनाने की कोशिश कर रही हैं। सबने एक ही रास्ता अपनाया है—सत्ता को किसी तरह हथियाने का। सन् १९६९ में 'हिन्दू' का नाम लेकर 'मध्यम पूँजीपति' (मिडिल कैपिटलिस्ट) सामने तो आया लेकिन टिक नहीं सका। हिन्दू-मात्र की एक ही राजनीति है, और वह उसका प्रतिनिधि है, यह भ्रम टिकाऊ नहीं हो सकता। सम्प्रदायवाद ऐसा बारूद तो हो सकता है→

चाँद की परिक्रमा और ग्रामदान-तूफान

मनमोहन चौधरी

तीन अमरीकियों ने चन्द्रमा की परिक्रमा करके मनुष्य की सभ्यता के इतिहास को एक नये मुकाम तक पहुँचाया है। इस घटना पर टिप्पणी करते हुए एक समाचार पत्र ने लिखा है : "चन्द्रयान 'अपोलो–८' सारी मनुष्य जाति के समवेत ज्ञान के बल पर चन्द्रमा तक पहुँचा। हजारों इंजीनियरों और श्रमिकों ने मिलकर अन्तरिक्षयान तैयार किया। चन्द्र-परिक्रमा के कार्यक्रम को सफल बनाने के निमित्त हजारों अन्य व्यक्तियों ने विभिन्न प्रकार का काम किया और उनके पीछे समय और दूरी की दृष्टि से न्यूटन से लेकर केपलर तक अनेक गणितशास्त्रियों, ज्योतिषशास्त्रियों, भौतिकशास्त्रियों, रसायनशास्त्रियों, प्राणि-शास्त्रियों और चिकित्सा-वैज्ञानिकों के शताब्दियों के अध्ययन व शोध का सिलसिला था। सबके समवेत परिश्रम का फल 'अपोलो–८' में एकाकार हुआ था।"

चन्द्र-परिक्रमा एक जबरदस्त तथ्य है, जिसका हमारी चेतना पर देर तक प्रभाव बना रहेगा। तात्कालिक दृष्टि से चन्द्रयात्रा एक अमेरिकी उपलब्धि है, लेकिन यह उपलब्धि पूरी मानव-जाति के हजारों वर्षों के संचित ज्ञान और शक्ति के समवेत प्रयास का परिणाम है। वस्तुतः यह मात्र ज्ञान और विज्ञान की उपलब्धि है। यह मानवीय संचेतना की भी उपलब्धि है। पूरे विश्व के मानव की आकांक्षा ने चन्द्र-यात्रियों को इस साहसपूर्ण कृत्य के लिए उत्साह प्रदान किया। उन्होंने भीषण खतरे की सम्भावना के बावजूद चन्द्रयात्रा का साहस किया। उसके पीछे चन्द्रयात्रा-कार्यक्रम में संलग्न अन्य सहयोगियों के प्रति उनके विश्वास की भावना थी और यह सब सदियों से चले आ रहे मूल्यों, और आध्यात्मिक आस्था से पोषित था। उन्होंने अपने धर्म-ग्रंथ बाइबिल से उत्साह ग्रहण किया और इस बात से भी कि तमाम दुनिया के हजारों नर-नारी उनकी सुरक्षा के लिए प्रार्थना कर रहे थे।

चन्द्रलोक की यात्रा और ग्रामदान में बहुत दूर-दराज का नाता है, लेकिन इसके बावजूद हम इससे कुछ सबक ले सकते हैं। ग्रामदान द्वारा हम एक नये समाज की नींव डालना चाहते हैं। वह नया समाज ५ लाख छिटपुट और एक-दूसरे से अलग-थलग ऐसे गाँवों का समाज नहीं होगा, जो अपनी-अपनी अलग-अलग जिन्दगी बितायेंगे। इसके बदले वे एक विशाल सहकारी ग्राम-कुल के अंग होंगे, जिनके नागरिकों को एक ऐसा जीवन बिताने की अधिक-से-अधिक सुविधाएँ प्राप्त होंगी जिसकी बुनियाद में स्वतंत्रता, प्रेम और शांति अधिष्ठित होंगे। यद्यपि हमारे प्रयत्न भारत की भौगोलिक सीमा तक मर्यादित हैं, फिर भी हम विश्वास करते हैं कि यह नया समाज सारी दुनिया में स्थापित होगा और इसके द्वारा इस आदर्श के विश्वव्यापी लक्ष्य-सिद्धि में सहायता मिलेगी।

अब हमें यह समझना होगा कि हमारा यह आन्दोलन "सभी लोगों के ज्ञान के योग-फल" से सफलता की सिद्धि प्राप्त करेगा। विनोबाजी ने कहा है कि आध्यात्मिकता यानी आत्मज्ञान तथा विज्ञान मिलकर सर्वोदय बनता है। हमें आत्मज्ञान के सिर्फ गहरे-से-गहरे उत्स तक ही नहीं बल्कि विज्ञान की ऊँची से ऊँची उपलब्धियों तक पहुँचना होगा। और अगर यह थोड़े-से लोगों तक सीमित रह जाय तो काम नहीं होगा। हमारे यहाँ के व्यापक जनसमूह को इसमें शरीक होना होगा। आज दुनिया में ज्ञान-प्राप्ति और उसका विनियोग एक बहुत बड़ा सहकारी प्रयास बन गया है, जिसमें दुनिया भर के लाखों नर-नारी संलग्न हैं। यूनान के प्रसिद्ध महाकाव्य 'ओडेसी' से चन्द्र-परिक्रमा तक की दास्तान एक ही मानवीय संस्कृति का नाटकीय रूपान्तर है। अगर हम विज्ञान की एक भी शाखा को लें तो देखेंगे कि उसके अन्तर्गत दुनिया के हजारों वैज्ञानिक शोध और प्रयोग में संलग्न हैं। फिर इन वैज्ञानिकों के पीछे उनसे कई गुने अधिक अन्य प्राविधिक

→जो समय पड़ने पर फट पड़े, लेकिन वह राजनीति में एक स्थायी तत्व नहीं बन सकता। उसके मुकाबिले में जातिवाद टिकाऊ है, क्योंकि उसमें हमारी समाजनीति और अर्थनीति, दोनों का सूक्ष्म मेल है।

भला हो या बुरा, आज की राजनीति दलों के हाथ में है, और चुनाव जातियों के। यह जानते हुए भी हम सर्वोदय आन्दोलन की ओर से कुछ मूल्य लेकर मध्यावधि चुनाव के मंच पर उतरे। हमने कुछ इनी-गिनी बातें कहीं। लोगों को अच्छी लगीं। हमारे आन्दोलन को प्रतिष्ठा मिली। कार्यकर्ताओं में एक नया आत्म-विश्वास जगा। आगे के लिए रास्ता खुला। साथ ही यह भी समझ में आया कि क्या साफ, ईमानदार और टिकाऊ सरकार, और क्या शुद्ध और निष्पक्ष चुनाव, इन दो में से कोई भी आज की पद्धति में संभव नहीं है। पूरी पद्धति को बदले बिना गुजर नहीं है। हमें वोटर को दल और जाति की जगह एक नयी निष्ठा देनी है—ग्राम-निष्ठा; नया हित देना है—ग्राम-हित; नयी व्यवस्था देनी है—ग्राम-व्यवस्था; नया प्रतिनिधित्व देना है—ग्राम-प्रतिनिधित्व। वोट की दृष्टि से दल और जाति की जो निष्ठाएँ बन चुकी हैं, उनकी जगह नागरिक की दृष्टि से देश और गाँव की नयी निष्ठाएँ बनानी हैं। देश का भविष्य वोट की निष्ठाओं में नहीं, नागरिकता की निष्ठाओं में है।

ग्रामदान तो मिल रहे हैं, और तेजी के साथ मिलेंगे भी, लेकिन प्रश्न है कि गाँव गाँववालों के लिए निष्ठा और प्रेरणा कैसे बने? हमारे लिए सन् १९७२ की यही चुनौती है। कौन जाने यह भविष्य का संकेत ही हो कि जो बिहार इस वक्त सबसे अधिक दलों का दलदल देख रहा है वह शीघ्र राज्यदान देखनेवाला है। राजनैतिक अनिश्चितता और राज्यदान का विकास, दोनों को मिलाकर बिहार में एक ओर स्वायत्त ग्रामव्यवस्था और दूसरी ओर दलमुक्त राज्यव्यवस्था के लिए अनुकूल परिस्थिति बन रही है। परिस्थिति को क्रान्ति का अवसर बनाना क्रान्तिकारी का काम है, यानी हमारा काम है।०

www.vinoba.in

तथा अन्यान्य कर्मी कार्य-संलग्न हैं, जिन्हें दूसरे ढंग की ऊँची योग्यता हासिल है। आधुनिक कृषि तथा उद्योग के क्षेत्र में काम करनेवाले कार्यकर्ताओं को आज कहीं ज्यादा शैक्षिक योग्यता और समझ की आवश्यकता पड़ती है। उत्पादकता और विज्ञान के बीच में सम्पर्क बना रहने पर दोनों का विकास होता है। विज्ञान का विकास शीशमहल जैसे किसी ऐसे स्थान में नहीं होता, जो दैनिक जीवन की यथार्थताओं से बिलकुल अलग हो, बल्कि वह आम जनता की सामान्य शिक्षा और संस्कृति के निरन्तर बढ़ते हुए स्तर से विकास की गति प्राप्त करता है।

लेकिन हमेशा से ऐसा ही नहीं होता आया है। धन-दौलत के मामले में जैसे आज की दुनिया में धनवालों और निर्धनों की दो अलग-अलग श्रेणियाँ हैं, उसी तरह एक ऐसा समय भी था, जब कि कुछ लोगों को ज्ञान प्राप्त करने का मौका था और कुछ लोगों को नहीं था। हमारे देश में ब्राह्मण लोगों को हर प्रकार का ज्ञान हासिल करने का अधिकार प्राप्त था और शूद्रों को ज्ञान-प्राप्ति की मनाही थी। यह स्थिति कई कारणों से थी और उसमें से प्रमुख कारण यह था कि उस समय की प्राद्योगिकी और उत्पादकता का स्तर नीचा था। दुनिया भर के मुल्कों में यही हालत थी, लेकिन भारत में ब्राह्मणों की विचारधारा के प्रभाव ने इसे एक मजबूत सामाजिक व्यवस्था का रूप दे दिया।

जब दुनिया के बुलन्द दिमागवालों ने समाज में मौजूद अन्याय और विषमता के विरुद्ध बगावत शुरू की तो उनमें से कुछ लोगों ने एक छोटे-से समूह द्वारा ज्ञान-प्राप्ति के एकाधिकार को अपने स्वार्थ के लिए हथियाने के खिलाफ भी विद्रोह किया। उनमें से टॉलस्टाय जैसे लोगों ने समस्त संस्कृति और शिक्षा को एक ऐसी आडम्बरपूर्ण विलास की वस्तु माना, जिसका उत्तम गुणवाले लोगों को परित्याग करना चाहिए। वे लोग मानते थे कि आम जनता के अन्दर जो पैदाइशी या सहज चेतना होती है वह उन्हें अच्छाई के सही रास्ते पर ले जाने के लिए पर्याप्त है। कैनेडा में कुछ लोग रहते हैं, जिन्हें "दोखोबोर" कहा जाता है। वे लोग जारशाही के

१०-१५ साल पहले कोई यह सपना भी नहीं देखता था कि चन्द्र-परिक्रमा इतनी जल्दी सम्भव होगी। लेकिन आज यह बात एक असलियत का रूप ले चुकी है। नया समाज बनाने के साधन हमारी पहुँच के अंदर हैं, बशर्ते हम उन तक पहुँचने की फिकर करें।

जमाने में रूस से आकर कैनेडा में बस गये थे। उन लोगों का अहिंसा में खासा अच्छा विश्वास है। वे अहिंसा धर्म और नीति की दृष्टि से सम्पूर्ण शिक्षा को असंगत मानते हुए उससे दूर रहते हैं।

हमारे देश में ब्राह्मणों के जीवन-दर्शन का अभी भी भारी प्रभाव है और ऊँची शिक्षा प्राप्त करने की सुविधा एक छोटे-से वर्ग को उपलब्ध है। जो लोग ऊँची स्थिति में पहुँच गये हैं वे सोचते हैं कि शिक्षा के व्यापक विस्तार-प्रसार के कारण ही हमारी राष्ट्रीय व्याधियाँ—जैसे बेकारी, छात्र-असंतोष और नक्सालबारी आदि पैदा हुई हैं। वे महसूस करते हैं कि यदि शिक्षा-प्राप्ति के अवसर सीमित कर दिये जायँ तो ये व्याधियाँ दूर हो सकती हैं। ऐसे लोगों का सामान्य-जन की क्षमता में भी भरोसा नहीं है। वे मानते हैं कि ऊँचे तबके के मुट्ठी भर लोग ही देश के भाग्य-निर्णायक हो सकते हैं। इसीलिए हमारी आर्थिक संयोजना और प्रशासन के दायरे में हर तरह से यह कोशिश की जाती है कि आम जनता किसी मामले में पहल न ले पाये और पहल लेने की शक्ति नौकरशाही के हाथों में केन्द्रित होती जाय। इस रुख के प्रतिक्रिया-स्वरूप एक वर्ग सामान्यजन की सामान्य बुद्धि को ही आदर्श मानता है।

दरअसल, समस्या इतनी आसान नहीं है। वस्तुतः व्यक्ति और समुदाय को इस बात की स्वतंत्रता रहनी चाहिए कि वे अपनी योग्यता और ज्ञान के अनुसार अपने जीवन की व्यवस्था कर सकें। और किसीको यह ताकत नहीं होनी चाहिए कि वह उन्हें धक्का देकर आगे ले जाय। व्यक्ति और समुदाय को यह अधिकार उपलब्ध होना चाहिए, यह सर्वोदयका आधारभूत और बुनियादी तत्त्व है। लेकिन इस अधिकार का भरपूर लाभ उसी समय उठाया जा सकता है, जब कि मानव-समाजके पास जो भी नया-से-नया ज्ञान और दक्षता है उसकी मदद ली जाय। इसका यह अर्थ होता है कि सामान्य-जन और ग्राम-दानी गाँवों के ग्रामीण विश्व-ज्ञान के भण्डार को खोलनेवाली कुंजी को प्राप्त करने में लग जायँ।

औसत आदमी के भीतर अनेक सहज स्वाभाविक प्रेरणाएँ होती हैं, जो वांछनीय और उदात्त हैं। लेकिन एक अस्वस्थ, अन्याय-पूर्ण और भ्रष्ट समाज-व्यवस्था योजनापूर्वक उन प्रेरणाओं की उपेक्षा करती है, तोड़ती-मरोड़ती है या दबाने का प्रयत्न करती है। लोगों को समझ-बूझकर इस समाज-व्यवस्था द्वारा लादी गयी गुलामी और तोड़-मरोड़ की पद्धति से अपनी आध्यात्मिक प्रेरणाओं को मुक्त करना होगा। लोगों को अपनी प्रेरणा से काम करने की क्षमता पुनः प्राप्त करनी होगी। इसके साथ-साथ उस प्रेरणा को ज्ञानपूर्वक और अधिक वेगवान और सूक्ष्म बनाना होगा।

सर्वोदय के अनुरूप समाज-व्यवस्था कायम करना अपने आप में एक भारी काम है। हमें इसके बारे में कोई गलत खयाल नहीं होना चाहिए। ग्रामदान इस ओर उठाया गया सिर्फ पहला कदम है। अपनी मंजिल तक पहुँचने के लिए हमें अभी कई कदम आगे बढ़ाना होगा। लेकिन इस स्थिति से किसीको निराश नहीं होना है। १०-१५ साल पहले कोई यह सपना भी नहीं देखता था कि चन्द्र-परिक्रमा इतनी जल्दी सम्भव होगी। लेकिन आज यह बात एक असलियत का रूप ले चुकी है। एक नया समाज बनाने के साधन हमारी पहुँच के अन्दर हैं, बशर्ते हम उन तक पहुँचने की फिकर करें। हमे इसके लिए आगे आना चाहिए। विनोबाजी बहुत अर्से से ज्ञान के महत्त्व पर जोर देते आ रहे हैं और इस बात पर भी कि हमारे देश के ५ लाख गाँवों तक यह ज्ञान पहुँचना चाहिए। अब तक इस मामले में हमने बहुत थोड़ा काम किया है। अब समय आ गया है कि चन्द्रलोक की विजय से प्रेरणा प्राप्त करके अपने समस्त साधनों के साथ हम इस काम में जुट जायँ।

www.vinoba.in

गाँव लोकसत्ता की सबल इकाई कैसे बने ?

हेमनाथ सिंह

मुंगेर जिलादान सम्पन्न हुआ; मुख्यतः ग्राम-स्वराज्य संघ के कार्यकर्ताओं के प्रयास से। कन्धा लगा उन समाज-सेवियों का, जिनकी सेवा का उनके क्षेत्र पर असर है। जब चम्पारण जिलादान सम्पन्न होने-होने पर था, तब एक दिन रमापति बाबू—मंत्री बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ—से भेंट हुई। वे चम्पारण जिलादान में सक्रिय रूप से लगे थे। गणिती तो वे हैं ही। मिलते ही उन्होंने बताया कि बिहारदान अब हाथ में आ गया है। हर जिले में गाँववालों के पास पहुँचने भर की देर है। हर प्रखण्ड के हर पंचायत में पहुँचने के लिए यदि जीप की व्यवस्था हो और साथ में ग्रामदान प्राप्त करनेवाले कार्यकर्ता हों तो गाँववालों की ओर से हस्ताक्षर करने में बहुत विलम्ब नहीं होता। मुंगेर जिले के अरियरी, शेखपुरा और बरबीघा प्रखण्डों में यह अनुभव प्रत्यक्ष आया।

दरभंगा जिलादान का जिन दिनों प्रयास चल रहा था, उन दिनों मधुबनी अनुमण्डल-दान की घोषणा के अवसर पर विनोबाजी ने कार्यकर्ताओं से जिन बातों का सावधानी बरतने के लिए कहा था, उनमें एक बात यह थी कि गाँववालों से ग्रामदान-हस्ताक्षर प्राप्त करते समय ग्रामदान की बातें कहने में एकरूपता है अथवा नहीं। उस समय उनकी बात सुन हमें थोड़ा आश्चर्य हुआ था कि बाबा ऐसा क्यों कहते हैं! मैंने मान रखा था कि कार्यकर्ता जब परिश्रम करके गाँव-गाँव पहुँचते हैं, तब ग्रामदान की चारों बातें ही कहते होंगे, अन्य नहीं। इस मान्यता की पृष्ठभूमि में मन में उद्वेग था कि बाबा कार्यकर्ताओं की नीयत पर शक करते हैं क्या? अथवा उन्हें यह भरोसा नहीं कि ग्रामदान का विचार गाँववालों तक पहुँचाने में ये समर्थ हैं।

गाँव का सामान्य अनुभव तो यह है कि गाँववालों का जिन पर भरोसा है, उनके कहने से वे ग्रामदान-घोषणा और समर्पणपत्र पर हस्ताक्षर करते हैं। कहीं-कहीं तो देखा कि समझानेवालों में से अधिकतर लोग जो कुछ कहते थे उसका सारांश यह था कि यह एक हस्ताक्षर-अभियान है, इसमें जमीन देना-लेना कुछ नहीं है, विनोबाजी को जब इसीमें सन्तोष है, तब हम लोग यह हस्ताक्षर प्राप्त करके उनको यह सबूत दे रहे हैं कि उनका संवाद हम लोगों ने गाँव-गाँव में पहुँचा दिया है। कहीं-कहीं यह भी अनुभव हुआ कि हस्ताक्षर प्राप्त करनेवाले मित्रगण इस अभियान को यथास्थिति बनाये रखने के विचार के जितना नजदीक संभव था उतना बतलाते थे। यह संभव है कि मैं जिन मित्रों के साथ घूमता था, उनकी यह भाषा हो। पर यह मानकर कि जिन लोगों ने पूरे जिले में ग्रामदान प्राप्त किया है आखिरी क्षण में उनसे भाषा के सम्बन्ध में कोई रगड़ा-झगड़ा न करूँ, उनकी बातों में कोई बाधा नहीं देता था। हाँ, अपनी ओर से ग्रामदान को ग्राम-स्वराज्य की बुनियाद के रूप में रखने की चेष्टा करता रहता था। पर कुल मिलाकर हस्ताक्षर करनेवालों के मन पर असर यह अवश्य होता था कि ग्रामदान में कुछ दान करने का संकल्प है। उन्हें यह सन्तोष अवश्य था कि जो सबका होगा, वही उनका भी होगा। ऐसा एक प्रसंग उस मुसलमान किसान से सुनने को मिला जिसने यह कहा, "ऐसा मत कहिए कि जमीन का वितरण वगैरह कुछ नहीं करना होगा। हाँ, यह अवश्य होगा कि जो आप लोगों की गति होगी वही हमारी भी होगी। हम देश के आन्दोलन के साथ रहना चाहते हैं, अलग नहीं।" इस तरह पाता यह था कि गाँववालों के कान में ग्रामदान का नाम चाहे जिस रूप में आता था, बीघा कट्ठा जमीन देने, मालकियत-विसर्जन, ग्राम-कोष एवं ग्रामसभा की बात किसी-न-किसी तरह उनके मन में आ ही जाती थी।

सर्व सेवा संघ ने ग्रामदान पर सेमिनार आयोजित कर 'ग्रामदान : प्रचार, प्राप्ति, पुष्टि' नाम की जो किताब निकाली है, उसके अनुसार यदि ग्रामदान का चित्र गाँव में खड़ा करने की कोशिश होती तो, संभव है, कार्यकर्ता को स्वयं रास्ता दीखता कि ग्रामदान-प्राप्ति के बाद क्या करना है। अभी तो ऐसा लगता है कि खादी-संस्था ने एक लक्ष्य अपने सामने रखा है कि ग्रामदान के हस्ताक्षर प्राप्त किये जायँ, तो कार्यकर्ताओं ने इसे पूरा किया। ग्रामदान में ग्रामस्वराज्य का बीज है, यह बात जिलादान प्राप्त करनेवाले प्रमुख लोगों के सामने चाहे जितनी भी स्पष्ट क्यों न हो, उसको प्रकट करने के आयोजन में एक कदम से अगला कदम अभी निकलता नहीं दीख पड़ता। मेरा खयाल है कि वह तब होता जब आयोजक एवं कार्यकर्ता सम्मिलित रूप से यह महसूस करते होते कि गाँव में जब पहुँच गये हैं तब हर परिवार में ग्रामदान से सम्बन्धित कुछ-न-कुछ किताब, फोल्डर अथवा परचा छोड़ आयें। चाहे पाँच पैसा ही सही, देकर जब कोई किताब या फोल्डर खरीदता है, तब उसे गौर से पढ़ जाने की उसकी एक वृत्ति बनती है। यह भी संभव है कि कार्यकर्ता का आग्रह देख सौजन्यवश पुस्तक का मूल्य वह दे देता हो। पर कार्यकर्ता के हाथों विचार का कोई छपा हुआ अंश पढ़े-लिखे ग्रामीण के हाथ भी बहुत कम मात्रा में पहुँचा है। कार्यकर्ताओं के मन में अगर गाँववालों से आगे भी जुड़े रहने की योजना होती तो वे गाँव छोड़ने के पहले उन्हें किसी-न-किसी सर्वोदय-पत्रिका का ग्राहक अवश्य बनाते। पर यह सब तो तब होता जब वे स्वयं इन पत्रिकाओं को नियमित पढ़ते होते। उनमें से तो कई ऐसे हैं, जो यह भी नहीं जानते होंगे कि सर्वोदय-आन्दोलन सम्बन्धी पुस्तकें एवं पत्रिकाएँ कहाँ से प्रकाशित होती हैं तथा कौन-कौनसी पुस्तकें एवं पत्रिका किसे पढ़ने के लिए दी जायँ!

जिलादान सम्पन्न होने पर अगला कदम क्या हो, इस सम्बन्ध में इस समय या तो उन संस्थाओं को पहल करनी चाहिए, जिन्होंने ग्रामदान प्राप्त किया है या व्यक्तिशः उन लोगों को जो ग्राम-स्वराज्य को मूर्त रूप में देखना चाहते हैं। अगला कदम क्या है, ग्राम-स्वराज्य का क्या चित्र है, आदि बातें तो शिविर की पद्धति से ही फैलायी जा सकती हैं। मेरा निवेदन है कि जिलादान प्राप्त करनेवाले प्रमुख लोग एकसाथ बैठकर अगला कदम स्थिर करें और उस दिशा में गाँव-गाँव को आगे बढ़ाने की योजना करें।●

www.vinoba.in

आन्दोलन के समाचार

दांडी से पोरबन्दर तक पदयात्रा

गुजरात के रचनात्मक कार्यकर्ताओं द्वारा आयोजित पदयात्रा-टोली ने गांधी-जन्म-शताब्दी के निमित्त से २ अक्तूबर '६८ के दिन दांडी से पोरबन्दर तक की यात्रा का श्रीगणेश किया था। टोली ने पिछले महीनों में बलसाड़, सूरत, भड़ोच और बड़ौदा जिलों की अपनी पदयात्रा पूरी करके पंचमहाल जिले में गत १४ जनवरी से प्रवेश किया है।

सर्वश्री रविशंकर महाराज, बबलभाई मेहता डा० द्वारकादास जोशी, जुगतरामभाई दवे आदि गुजरात के प्रमुख सर्वोदय-सेवक बीच-बीच में पदयात्रियों के पड़ावों पर पहुँचकर उनके कार्यक्रमों में सम्मिलित होते रहते हैं।

बड़ौदा जिले की पदयात्रा के चलते वहाँ जिले भर के शिक्षकों का सम्मेलन हुआ और उसमें 'आचार्यकुल' की चर्चा की गयी। बड़ौदा जिला शिक्षण-समिति ने अपने प्राथमिक विद्यालयों के शिक्षकों के सम्मेलन तहसील के मुकामों पर आयोजित किये। पदयात्रियों को ग्रामजीवन के वैभव और दारिद्र्य के दोनों पहलुओं का दर्शन होता रहता है।

लोकयात्रा से

सुश्री निर्मल वैद ने अपने २८ जनवरी '६९ के पत्र में लिखा है, "हिसार में ६ रोज तक हमारा पड़ाव रहा। वहाँ के कृषि-विद्यालय के करीब दो हजार छात्राध्यापकों के बीच डेढ़ घंटे तक चर्चा और प्रश्नोत्तर का क्रम चला। अन्य विविध कार्यक्रम नगर में आयोजित हुए। महिलाओं की अलग भी एक बहुत बड़ी सभा हुई। कुछ बहनों ने समाज-सेवा के लिए अपना समय दिया। हिसार के टेक्सटाइल मिल में तो पूरे दिन भर का व्यस्त कार्यक्रम रहा। हिसार में हमारे छात्रजीवन के कई मित्रों से १०-१५ वर्षों बाद मुलाकात हुई।"

भारत की ग्रामीण संस्कृति
गांधीजी का शिक्षा-जगत् को सन्देश

गांधीजी ने कहा था :

"हम ग्रामीण संस्कृति के उत्तराधिकारी हैं। हमारे देश की विशालता, यहाँ की विराट् जनसंख्या एवं इसकी स्थिति और जलवायु के कारण ग्रामीण संस्कृति ही यहाँ सर्वथा उपयुक्त है। यद्यपि वर्तमान ग्रामव्यवस्था की कमियाँ सर्वविदित हैं, परन्तु उनमें से एक भी ऐसी नहीं है जो नाइलाज हो। इस देश में ग्रामीण संस्कृति को उखाड़ फेंककर शहरी संस्कृति की स्थापना असम्भव ही है, जब तक कि किन्हीं प्रचण्ड साधनों द्वारा यहाँ की ३० करोड़ (आज तो ५० करोड़) जनसंख्या को ३० लाख या ३ करोड़ तक ले आने का कोई भयंकर विचार न करे। अतः ग्रामीण संस्कृति को ही इस देश में स्थायित्व देना होगा, ऐसा मानकर मैं इसके वर्तमान दोष दूर करने के उपाय बताता हूँ।

"इसका एकमात्र हल यही है कि इस देश के नवयुवक अपने को ग्रामीण जीवन में ढाल लें। यदि वे इस ओर बढ़ना चाहें तो अपने जीवन के पुनर्निर्माण हेतु उन्हें अवकाश के हर दिन का उपयोग अपने कालेज या स्कूल के समीपवर्ती गाँवों में करना चाहिए। जो युवक शिक्षण समाप्त कर चुके हों या जो शिक्षा प्राप्त कर रहे हों उन्हें तो गाँवों में जाकर बस ही जाना चाहिए। वहाँ उन्हें सेवा, शोध एवं ज्ञान-प्राप्ति का अपार क्षेत्र मिलेगा। शिक्षकगण यदि छात्र-छात्राओं के अवकाश के दिनों में, उन पर साहित्य-अध्ययन का बोझ डालने के बजाय उनके लिए गाँवों में विचार-शिक्षण का कार्यक्रम निर्धारित करेंगे तो बहुत उपयुक्त होगा। अवकाश के दिनों का उपयोग पुस्तकें याद करने में नहीं, सृजनात्मक कामों में होना चाहिए।"

उपरोक्त गांधी-वाणी भारत की वर्तमान युवक-समस्या के समाधान हेतु एक महत्त्वपूर्ण संकेत है। लक्ष्यहीन शहरी जीवन के अभ्यस्त एवं किंकर्तव्यविमूढ़ नवयुवक को ग्रामीण जीवन में प्रवेश देने हेतु विनोबाजी ने आज ग्रामदान रूपी नया द्वार खोल दिया है।

क्या शिक्षा-जगत् इस ओर ध्यान देगा ?

गांधी रचनात्मक कार्यक्रम उपसमिति (राष्ट्रीय गांधी जन्म शताब्दी समिति), दुंकलिया भवन, कुम्हीगरों का भेरू, जयपुर-३ राजस्थान द्वारा प्रसारित।

www.vinoba.in

नाथनगर प्रखण्डदान विनोबाजी को समर्पित

गत १८ फरवरी '६९ को भागलपुर जिले का नाथनगर प्रखण्डदान विनोबाजी को समर्पित किया गया। प्रखण्डदान का विवरण :

	कुल संख्या	शामिल संख्या
पंचायतें :	१४	१४
गाँव :	७८	७६
जनसंख्या :	७०,०००	६२,४००

इन्दौर नगर में महिलाओं का विशाल मौन शांति-जुलूस

इंदौर, १२-२-६९। इंदौर नगर में एक विशाल जुलूस निकला, जिसमें लगभग ३००० महिलाओं ने भाग लिया। कस्तूरबाग्राम में गत ५ से १२ फरवरी तक हो रहे कस्तूरबा-सम्मेलन में देश के विभिन्न भागों से आयी ८०० बहनों ने भी इसमें भाग लिया। इसके अलावा नगर की विभिन्न महिला शिक्षण-संस्थाओं और महिला-मण्डलों की सभ्रान्त बहनें सम्मिलित थीं।

इस विशाल मौन जुलूस में लगभग दो मील तक शांति और सौम्यता के साथ हाथों में बैनर लिये, जिन पर "सत्य, प्रेम, करुणा" "हमारा कार्यक्रम शान्ति-सेना, शील-रक्षा", "हमारा मंत्र जय जगत्—हमारा तंत्र ग्रामदान", "माता अहिल्यादेवी की नगरी से अशोभनीय पोस्टर हटाये जायँ" आदि वचन लिये हुए बहनें नगर के केन्द्र सुभाष चौक, राजवाड़ा से गांधी-प्रतिमा तक पहुँची। बापू की प्रतिमा की परिक्रमा कर जुलूस नेहरू पार्क में पहुँचकर एक सभा के रूप में परिवर्तित हो गया। जुलूस का नेतृत्व सुश्री मणिबेन पटेल, श्री यशोधरा दासप्पा, श्रीमती लक्ष्मी मेनन, कस्तूरबा ट्रस्ट की अध्यक्षा श्रीमती प्रेमलीला ठाकरसी, मध्यप्रदेश गांधी-शताब्दी समिति की महिला-बाल उपसमिति की अध्यक्षा श्रीमती सरोजम्मा रेड्डी आदि महिलाएँ कर रही थीं।•

विभिन्न स्थानों में सर्वोदय-पक्ष

(३० जनवरी से १२ फरवरी)

गाजीपुर में सर्वोदय-पक्ष में प्रभात फेरी का आयोजन हुआ और सूत्रयज्ञ का। शान्ति-सैनिकों तथा किशोर-दल का जुलूस निकला। शान्ति-बैज तथा साहित्य बेचा गया। भिंड जिले में ३० जनवरी से १२ फरवरी के बीच विभिन्न स्थानों में सभाएँ की गयीं। १२ फरवरी को प्रशिक्षण बुनियादी विद्यालय में जिला गांधी-शताब्दी समिति के मंत्री श्री लल्लू दद्दा के मार्गदर्शन में एक सभा आयोजित की गयी। सादाबाद में सर्वोदय-पक्ष के अवसर पर ५ ग्रामदान हुए। १२ फरवरी को गोकुल में सर्वोदय-मेला लगा। सूत्रयज्ञ, सामूहिक प्रार्थना, तथा सूतांजलि समर्पित की गयी। इस अवसर पर मतदाता-शिक्षण का कार्यक्रम विशेष रूप से चला। मध्यावधि चुनाव के फोल्डर और पोस्टर की मदद से यह काम आसान हो गया था। मथुरा में प्रभात फेरी, सामूहिक सूत्रयज्ञ तथा सूतांजलि-समर्पण का कार्यक्रम हुआ, तथा गांधी-विचार पर प्रकाश डाला गया। लहेरिया-सराय में बिहार खादी-ग्रामोद्योग संघ के प्रांगण में १२ फरवरी को सूत्रयज्ञ, सफाई और सूतांजलि-समर्पण का आयोजन हुआ। इस आयोजन में मुख्य अतिथि थे पं० श्री रामनन्दन मिश्र। उन्होंने अपने प्रवचन में व्यक्ति के चरित्र-निर्माण पर जोर दिया।

इलाहाबाद के पर्यवेक्षक दल का निवेदन

मध्यावधि चुनाव के लिए विभिन्न पक्षों ने आचार-संहिता बनाते समय जिस पर्यवेक्षक दल का गठन किया था, उसने गत १० फरवरी को एक प्रेस वक्तव्य दिया है, जिसमें कहा है—"पर्यवेक्षक दल के सदस्यों ने विभिन्न मतदान-केन्द्रों पर घूमकर जनता तथा उम्मीदवारों तथा उनके कार्यकर्ताओं से मुलाकातें कीं। विश्वविद्यालय शान्ति-सेना दल के पचास शान्ति-सैनिक, कालेजों के बीस शान्ति-सैनिक एवं खादी तथा शान्ति-सेना के स्वयंसेवक, लगभग नब्बे लोग चुनाव के तीसरे और अन्तिम दौर में कार्यरत रहे।" उन्होंने कहा है, "कुछ मामूली शिकायतों को छोड़कर कोई ऐसी चीज हमारे देखने में नहीं आयी, जिससे शान्ति भंग हुई हो या चुनाव-कार्य में बाधा पड़ी हो।" जाति-पाँति और धर्म के नाम पर वोट मांगा गया, इस पर अपना दुःख प्रकट किया गया है और कहा गया है, कि अधिकतर उम्मीदवारों एवं पक्षों ने जात-पाँत एवं धर्म आदि का वोट-प्राप्ति के साधन के रूप में इस्तेमाल किया, जो पारस्परिक सम्बन्धों में आगे चलकर कटुता पैदा कर सकता है। हमें डर है कि अगर इस प्रवृत्ति को रोका नहीं गया तो इसका राष्ट्र के जनजीवन पर हानिकारक असर पड़ेगा और हमारी एकता और स्वतंत्रता दोनों, खतरे में पड़ सकती है।

—सत्यप्रकाश

नशाबन्दी दिवस

मथुरा, २ फरवरी '६९। आज मद्य-निषेध के सन्दर्भ में शराब के ही ठीके पर ४० कार्यकर्ताओं ने सूत्रयज्ञ एवं प्रचार-पोस्टरों के साथ मौन-प्रदर्शन किया, जिनमें माध्यमिक कला विद्यालयों की प्रधानाचार्या तथा छात्राओं ने विशेष उत्साहपूर्वक भाग लिया।

श्री धीरेन्द्र भाई का कार्यक्रम

२३ फरवरी से १० मार्च : जिला सर्वोदय मण्डल, आरा (शाहाबाद)

११ से १२ मार्च : सर्व सेवा संघ, राजघाट, वाराणसी–१

१४ से २३ मार्च : श्री गांधी आश्रम, मोतीगंज, आगरा

२४ से २५ मार्च : श्री नेहरू महाविद्यालय, ललितपुर (झाँसी)

२७ मार्च से १ अप्रैल : जिला सर्वोदय मंडल, तालदरवाजा, टीकमगढ़ (म० प्र०)

वार्षिक शुल्क : १० रु०; विदेश में २० रु०; या १५ शिलिंग या ३ डालर। एक प्रति : २० पैसे।
श्रीकृष्णदत्त भट्ट द्वारा सर्व सेवा संघ के लिए प्रकाशित एवं इण्डियन प्रेस (प्रा०) लि० वाराणसी में मुद्रित।

www.vinoba.in

इस अंक में

दो चेहरे
ग्रामदान की तीन मंजिलें : व्यंग्य–जिज्ञासा–हस्ताक्षर
बदलते आदमी, बदलते गाँव
ग्रामदानी गाँव की होली
'तुम भी सही कर दो'
बैंगन की कीड़ों से रक्षा
चुनाव में एकता पराजित हो गयी
'गांधी मर गया'

२४ फरवरी, '६९
वर्ष ३, अंक १३] [१८ पैसे

दो चेहरे

ज्यों चुनाव का हो हल्ला कुछ पड़ा कान में,
मतदाताजी मूंछ ऐंठने लगे शान में !
नेता चरण पूजते, "मालिक तू है भाई,
महिमा तेरी बहुत कहाँ तक करूँ बड़ाई !
आस तुम्हारे वोट की, और न कोई आस !
वोट का 'ठप्पा' मार दो, रहूँ जनम भर दास !
रहूँ जनम भर दास, सभी सुख तुम पर वारूँ
सेवा करके लोक और परलोक सुधारूँ !
तरह-तरह के नेता लाये, रंगबिरंगे झण्डे,
'वादों' की पेटी में भर-भरकर चुनाव-हथकण्डे—
"जाति, धर्म, कुनबे की जय-जय !" बोले औघड़नाथ–
"राजनीति में लोकनीति का, बालक हुआ अनाथ !"

दंगल जीत लिया नेताजी ने चुनाव का,
पकना शुरू हुआ मंत्रीपद के पुलाव का !
मतदाताजी चरण चूमकर करें आरजू—
"एक बार तो नजर फेर लें महाराजजू !
हम हैं गवईं गाँव के, दीन-हीन-निरुपाय,
संकट हमरे दूर हों, ऐसा करें उपाय !
ऐसा करें उपाय, नाथ अब आस तिहारी,
देगी वोट तुम्हें आगे भी जाति हमारी !"
नेताजी मुँह फेर उधर को, करते 'कुर्सी-जाप'—
"जाने कबतक घिघियायेगा यह जाहिल का बाप !"
'जनता-मालिक-नाटक' खत्म हुआ अब भाई,
'नेता-माई-बाप' की अब तो बारी आई !

—अनिकेत

चुनाव के पहले

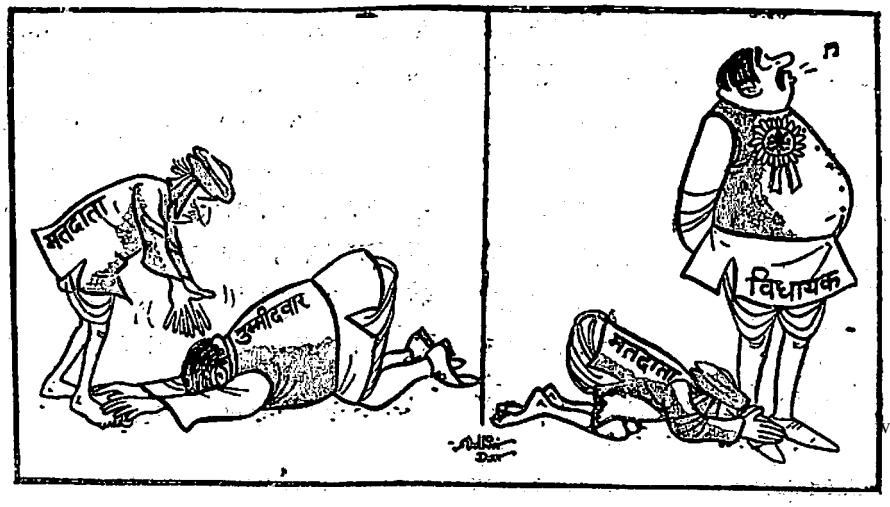

चुनाव के बाद

कार्टून : 'हिन्दुस्तान-टाईम्स' से साभार :

www.vinoba.in

ग्रामदान की तीन मंजिलें
व्यंग्य-जिज्ञासा-हस्ताक्षर

जिन्हें ग्रामदान के विचार का परिचय तो है लेकिन तूफान में पड़ने का सौभाग्य नहीं मिला, वे अक्सर यह शंका करते हैं कि सामान्य कार्यकर्ताओं के प्रयास से ग्रामदान किस प्रकार हो सकता है ? १ दिसम्बर को बिहार भूदान-यज्ञ कमिटी के नये कार्यकर्ता सर्वोदय-विचार की प्रारम्भिक जानकारी के लिए खादीग्राम बुलाये गये। सबके सब कोरे थे, स्कूल-कालेज छोड़कर अपनी रोटी के लिए कमिटी की सेवा स्वीकार की थी। कमिटी के मंत्री श्री निर्मल भाई ने दो दिनों तक विचार समझाया। उन लोगों ने 'ग्रामदान-दर्शन' नामक श्री अनिल भाई की चित्र-प्रदर्शनी देखी, और 'गाँव का विद्रोह' नामक श्री राममूर्ति भाई की पुस्तक पढ़ी। सबके सब लोग मुंगेर-जमालपुर क्षेत्र में ग्रामदान के लिए भेजे गये। मेरे पास भी पाँच साथी श्री राम-नारायण बाबू का पत्र लेकर आये। मुझे कोई उत्साह नहीं मिला। मजदूरों का यह बीहड़ क्षेत्र, इसमें ये नये साथी क्या कुछ कर पायेंगे ? मित्रों को पंचायतों के प्रमुख लोगों के नाम पत्र लिखकर भेजा। अपने मन में जिज्ञासा हुई कि एक-एक मित्रों के यहाँ जाकर देखें कि वे क्या कर रहे हैं। प्रान्त के कोने-कोने से आये हैं, कम-से-कम उन्हें कष्ट नहीं होने पाये। लेकिन जहाँ भी गया, उनकी प्रगति देखकर दंग रह गया।

रविवार की संध्या समय, एक चाय की दूकान पर एक अच्छी जमघट थी। सूट-पैंटवाले बाबू लोग जुटे थे। कोई चाय की चुस्की ले रहा था तो कोई सिगरेट का धूआँ छोड़ रहा था। उनके बीच एक कार्यकर्ता चुपचाप बैठा था। उपस्थित लोगों के बीच फोल्डर और पर्चे वितरित किये गये थे। उटपटांग प्रश्न हो रहे थे : 'क्यों नहीं विनोबाजी एक बार भारत-दान ही कर देते हैं ?' 'अरे भाई, ये लोग अपने पेट के लिए घूम रहे हैं,' आदि आदि। कार्यकर्ता भाई ने रामायण की एक पंक्ति बोली, 'एकु तो मंद मूढ़मति कुटिल हृदय अज्ञान'। और फिर आगे बोले : भाई साहब, मैं सामान्य जानकारी का बाबा का सेवक हूँ। यदि ग्रामदान में किसी ऐसे त्याग की आवश्यकता होती, जैसा कि आप सोच रहे हैं, तो मैं आप तक आने का साहस नहीं करता। हमारा आपसे क्या परिचय ? हमारे कहने पर आप किसीको कोई चीज क्यों दे देंगे ? यदि ग्रामदान का अर्थ सारी जमीन विनोबाजी को दे देना होता तो हमारे इस निवेदन के साथ ही मुझे आप गाँव से बाहर निकलवा देते। आपके दिल में आज की परिस्थिति के प्रति निराशा है, मैं भी उससे पीड़ित हूँ। जब पढ़ना आरम्भ किया था तब बड़ा हौसला था। लेकिन पेट ने हमें पढ़ाई छोड़ने को मजबूर किया। न जाने कितनी जगह आवेदन किया ! परमात्मा की कृपा से सब जगह से मुझे निराश होना पड़ा। सोच रखा था कि पैरवी और पहुँच के बिना शायद परमात्मा भी शरण नहीं देगा। लेकिन रहा होगा कोई पूर्वजन्म का पुण्य जो संत के विचार को लेकर आप लोगों के दर्शन को आने का मौका मिला। आप सब सोचने के लिए स्वतंत्र हैं और हमारे जैसे नाचीज की ओर से कोई दबाव भी आप पर हो नहीं सकता। मैं विनम्र शब्दों में निवेदन करूँगा कि आन्दोलन का दुर्भाग्य है कि आप जैसे पढ़े-लिखे लोगों को भी इस कार्यक्रम की सही जानकारी नहीं है। आज से सिर्फ ३ दिन पहले मैंने भी दूर-दूर से इस आन्दोलन के बारे में कुछ सुन रखा था और आप जैसे प्रश्न पूछ रहे हैं, वे सारे प्रश्न हमारे भी थे। लेकिन इन दिनों मैंने जो समझा उससे मुझे बहुत राहत मिली है।'

'मित्रो, सिर्फ १० मिनट मुझे निवेदन करने का मौका दें।' उनके शब्द एक-एक व्यक्ति को छू रहे थे। सब लोग शान्त होकर सुनने लगे। उन्होंने 'फोल्डर' से ग्रामदान का विचार पढ़कर सुनाया। फिर प्रश्न शुरू हुए। कार्यकर्ता भाई ने धीरेन्द्र भाई की प्रश्नोत्तरी सम्भाली और एक-एक का उत्तर दिया। अब फिजा दूसरी ही थी। मैंने साइकिल खड़ी की। आगे बढ़ा। दो-एक सज्जन मेरे परिचित थे। मैंने उनमें से एक से पूछा, 'क्या सहदेव बाबू, अब अपने गाँव का ग्रामदान होगा ?, बीच में ही एक युवक आगे आकर बोला, बड़े अच्छे मौके पर यह विचार हमारे गाँव में आया है। अभी चुनाव की व्यूह-रचना शुरू भी नहीं हुई थी कि आपस में तू-तू मैं-मैं शुरू हो गया था। मुझे विश्वास है कि इस कार्यक्रम से हमारा गाँव टूटने से बचेगा। उस युवक ने कार्यकर्ता के हाथ से घोषणापत्र लिया और वहाँ उपस्थित एक-एक आदमी का हस्ताक्षर पूरा हो गया।

—सूर्यनारायण शर्मा

www.vinoba.in

बदलते आदमी, बदलते गाँव

असम के उत्तर लखीमपुर जिले में जिलादान-अभियान चल रहा है। लखीमपुर से कुछ दूर पर माझगाँव-कमलाबरिया गाँव हैं, जिनका दस वर्ष पहले ग्रामदान हुआ था।

एक दिन शाम को मैं माझगाँव की सामूहिक प्रार्थना में शरीक हुआ। प्रार्थना यहाँ रोज होती है। प्रार्थना के बाद हाजिरी के लिए बारी-बारी से सबका नाम पुकारा जाता है,और लोग 'जय जगत्' कहकर जवाब देते हैं। फिर असमिया 'भूदान-यज्ञ' सबको पढ़कर सुनाया जाता है। उसके बाद गाँव के मसलों पर चर्चा शुरू होती है। मिलकर रास्ता खोजा जाता है। संयोजिका हैं सर्वेश्वरी, शान्ति-सेवादल की नायिका। फणीप्रभा बालवाड़ी चला रही हैं। घर-घर में 'सर्वोदय-पात्र' रखवाया है। महिला समिति प्रत्येक रविवार को सामूहिक सूत्रयज्ञ और पठन-वाचन करवाती है।

पैसे की कुछ बाहरी मदद मिल गयी तो गाँव में एक सहकारी दूकान खोल ली गयी है। इससे बाहर के व्यापारी का शोषण बन्द हो गया है। वह अपनी दूकान उठा ले गया है। सामूहिक खेती में सब लोग श्रमदान करते हैं, जिसकी आमदनी 'ग्रामकोष' में इकट्ठा होती है। गाँव के लोग अब अदालत-कचहरी में नहीं जाते, शराब पीना भी छोड़ दिया है। ग्रामदान के अध्यक्ष हैं भोलानाथ और मंत्री हैं डिबेश्वर। सभा में जिलादन की भी चर्चा हुई।

कमलाबरिया सन् १९५८ में ग्रामदान हुआ था। सरकारी कानून के अनुसार ग्रामदान की पुष्टि भी हो गयी है। ग्रामसभा के मंत्री शनिराम ने बतलाया कि गाँव के चालीस परिवारों में से तीन नहीं शामिल हुए। गाँव में एक परिवार के पास अधिक-से-अधिक भूमि ५० बीघे और कम-से-कम ७ बीघे है। भूमिहीन कोई नहीं है। जमीन की मालकियत ग्रामसभा की है। ग्रामकोष में भी अभी ढाई हजार रुपये शेष हैं।

'नामघर' (गाँव की सार्वजनिक चौपाल, जहाँ कीर्तन-भवन तथा गाँव की पंचायत होती है) में साप्ताहिक सामूहिक प्रार्थना होती है। कोई झगड़ा हुआ, तो आपस में बैठकर सुलझाते हैं, कचहरी नहीं जाते।

इस इलाके के चार ग्रामदानी गाँवों ने मिलकर एक 'ग्रामदान-संघ' बनाया है, जिसके अध्यक्ष श्री भदेश्वर बरा से भेंट हुई। ये लोग अन्य गाँवों को ग्रामदान में लाने के लिए पदयात्राएँ निकालते हैं। निर्माण-कार्य करने का भी विचार है। जनकपुर गाँव ऐसे आदिवासियों का है, जो पहले चाय-बगानों में मजदूर थे, बाद में ईसाई हो गये (उनका उसके पूर्व कोई धर्म नहीं था)। 'मैत्री आश्रम' की कोशिश से उन्हें बाहर से दस हजार रुपये की मदद मिली, जिनसे बैल खरीदे गये हैं। इसके भुगतान में हर साल बारह मन धान वे ग्रामसभा को लौटाते हैं। इस धान से जिनके बैल मर जाते हैं उन्हें नये बैल खरीद दिये जाते हैं। ग्रामीणों ने रात्रि-पाठशाला चलायी है, जिसके लिए मिट्टी का तेल और पुस्तकें दी जाती हैं। स्थानिक समिति की ओर से एक सहकारी दूकान चलती है।

—जगदीश थवानी

ग्रामदानी गाँव की होली

रतनपुर पक्की सड़क के किनारे का एक गाँव है। गाँव में लगभग २०० परिवार हैं। गाँव के किनारे सड़क होने के कारण कुछ लोगों ने दूसरी जगह से आकर सड़क के किनारे की जमीन पर दूकानें बनवा ली हैं। रतनपुर में सभी प्रमुख जातियों के लोग रहते हैं। ब्राह्मण, क्षत्रिय, कायस्थ, कुनबी, अहीर, पासी, नाई, कानू, कहार और चमार के साथ-साथ रतनपुर में कुछ जुलाहे और सड़क के किनारे कुछ तेली, तमोली और पंजाबी परिवार हैं।

रतनपुर के ग्रामीणों ने तीन महीने पहले अपने गाँव के ग्रामदान की घोषणा की। ग्रामदान के घोषणापत्र पर जब दस्तखत हो रहे थे तो ब्राह्मण, क्षत्रिय, कायस्थ, अहीर और कुनबी परिवारों में से कुछ लोगों ने हस्ताक्षर करने में आनाकानी की। हस्ताक्षर न करनेवालों ने कहा था कि जब हम देख लेंगे कि ग्रामदान से क्या फायदा होता है तब ग्रामदान में शामिल होंगे।

ग्रामदान की घोषणा होने के बाद तीन महीने बीत चुके अभी तक रतनपुर में ग्रामदान की घोषणा के बाद न कोई सभा बुलायी गयी थी और न कोई दूसरा काम हुआ था। बीच में मध्यावधि चुनाव आ गया, इसलिए गाँव के विचारशील लोगों ने सोचा कि चुनाव की चहल-पहल बीत जाय तो ग्रामदान के आगे के काम के बारे में सोचा जायेगा। मध्यावधि चुनाव भी जब हो गया तो गाँव के बुजुर्ग श्री शंभुनाथ मिश्र ने सोचा कि अब ग्रामदान की पुष्टि के बारे में कुछ होना चाहिए। उन्होंने ग्रामदान के घोषणा-पत्र पर सबसे पहला हस्ताक्षर किया था। उनके बाद श्री रामदास सिंह, श्री रामप्रसाद, श्री रामनाथ

www.vinoba.in

यादव, श्री रामधनी, श्री अलियार और जद्दू राम ने हस्ताक्षर किये थे। इसके बाद तो जैसे हस्ताक्षर करनेवालों का तांता लग गया।

श्री शम्भुनाथ मिश्र ने अपने बाद हस्ताक्षर करनेवाले छहों व्यक्तियों को अपने बैठके में बुलवाया। निश्चित समय पर सब लोग आ गये। श्री शंभुनाथ मिश्र ने कहा—"ग्रामदान की घोषणा पर दस्तखत किये कई महीने हो गये। उसके बाद हम लोग अपने-अपने धंधे में लगे रहे। इसी बीच मध्यावधि चुनाव आया और वह भी बीत गया। अब हमें ग्रामदान के अगले कदम के बारे में सोचना है।"

श्री रामदास सिंह ने कहा—"बाबा! आपने हमें बुलाकर बड़ा जरूरी काम किया है। ग्रामदान की घोषणा करने के बाद अभी तक हमने सचमुच कुछ किया नहीं। जिन लोगों ने ग्रामदान घोषणा-पत्र पर हस्ताक्षर नहीं किया, उन्होंने कहा था कि ग्रामदान का काम देखकर फिर शामिल होंगे। मध्यावधि चुनाव बीता तो अब होली आनेवाली है। क्यों न होली बीत जाने पर इसके बारे में विचार करें?"

श्री रामप्रसाद—"मेरा तो विचार है कि इस तरह टालते रहने से कुछ नहीं हो सकेगा। गांव की जिन्दगी में कभी चैन लेने की नौबत नहीं आती। जो कुछ करना-धरना हो वह तय करके उसका पालन करना चाहिए। कहा भी है कि काल करे सो आज कर, आज करे सो अब।"

"मुंशीजी, आप रंगीन तबीयत के चतुर आदमी हैं। आप सोचते हैं कि फगुआ के मुहूर्त में ग्रामदान का जोगीरा गली-गली और खोर-खोर में गाया जाय।" "मुंशीजी के सुर में सुर मिलाने के लिए भला कौन राजी नहीं होगा! मुझे ढोलक बजाना नहीं आता, लेकिन मजीरा तो बजाऊंगा ही।"—श्री रामनाथ यादव ने कहा।

श्री रामधनी, श्री अलीयार और जद्दू राम ने एकसाथ सिर हिलाकर कहा—"रामनाथ भैया ने सवा लाख की बात कही है। ग्रामदान के बाद हमारी यह पहली होली आ रही है। हमें होली का सा रंग जमाना चाहिए कि सबको गोकुल की याद आने लगे और देखनेवाले देखते ही रह जायं।"

"ग्रामदान का घोषणा करके हम लोगों ने यह संकल्प प्रकट किया है कि हम गांव को एक परिवार मानकर गांव के हर व्यक्ति को अपने परिवार का अङ्ग बनायेंगे। होली एक ऐसा अनोखा त्योहार है कि यह हमें सबसे मिलाता है और सबसे सबको आनन्द और उल्लास प्राप्त कराता है। यही एक ऐसा अजब त्योहार है जो जात-पांत, स्त्री-पुरुष, छोटे-बड़े, धनवान-गरीब और ऊंच-नीच का भेद-भाव मिटाकर सबको एक-दूसरे का संगी बना देता है"—यह कहते हुए पंडित शंभुनाथ मिश्र जैसे ग्राम-परिवार की धारा में बहने लगे।

श्री रामदास सिंह ने उन्हें जैसे सम्भालते हुए कहा—"बाबा, आपने तो साठा में पाठा होनेवाली कहावत सही साबित कर दिया। आपका कहना बिलकुल ठीक है। हमें होली ऐसे ढङ्ग से मनाने का तरीका सोचना चाहिए कि गांव का हरेक आदमी उसमें आनन्द पा सके और ग्राम-परिवार की भावना बढ़े।"

श्री अलीयार ने कहा—"अपनी तरफ से मैं सिर्फ एक अर्ज करना चाहता हूं कि होली के मौके पर जो फूहड़ किस्म की गालियां और भद्दे जोगीरा गाये जाते हैं उनकी जगह भगवान रामचन्द्र और श्रीकृष्णजी से सम्बन्ध रखनेवाले अच्छे जोगीरा ही गाये जायं, ताकि गांव के बच्चों और लड़कों को इस त्योहार से अच्छी तालीम मिल सके।"

श्री रामधनी—"अलीयार भाई ने तो कमाल की बात कही है! मैं इसमें इतना और जोड़ना चाहता हूं कि इस बार हम-लोग होली-सम्बन्धी सामान जैसे—रंग, अबीर, मेवा, पान, इलायची, सौंफ आदि एकसाथ चंदा करके मंगा लें और फिर पूरे गांव के लोगों के लिए उसे खर्च करें। इससे गरीब और अमीर, सबको इस त्योहार का भरपूर आनन्द मिल सकेगा।"

जद्दू राम ने गद्गद् होकर कहा—"भगवान करें कि ग्रामदान देशभर में जल्दी फैल जाये, ताकि गांव के गरीब दुखिया की जिन्दगी में भी खुशियाली आ सके। बस एक बात मैं जोर देकर कहना चाहता हूं कि होली के हुड़दंग में किसीके साथ जोर-ज्यादती नहीं होनी चाहिए। गन्दा कीचड़, कालिख या ऐसी ही दूसरी चीजें चेहरे पर पोतने या देह पर रगड़ने का तरीका ठीक नहीं है। इससे किसीको आनन्द मिलता है और किसीको कष्ट पहुँचता है। यह ठीक नहीं है।"

श्री रामप्रसाद—"आज की सभा बुलाकर पंडितजी ने बड़ा अच्छा काम किया। होली के सामूहिक फण्ड का सुझाव बहुत ठीक है। मैं अपनी ओर से इसके लिए ५ रु० देता हूं। श्री अलीयार के इस सुझाव का भी मैं स्वागत करता हूं कि गाली-गलौजवाले जोगीरे के बदले राम और कृष्णजी से सम्बन्धित फाग ही गाये जायं। व्रजभाषा के कई कवियों की भी अच्छी-अच्छी रचनाएं चुनकर गांव के बच्चों को बतायी जायं तो इससे उनका संस्कार बनेगा और ज्ञान भी बढ़ेगा।"

www.vinoba.in

'तुम भी सही कर दो'

गांव में हमारे पहुँचते ही लोगों में कुतूहल पैदा होता है। एक-दूसरे से लोग पूछने लगते हैं—"क्यों आयी हैं बहनें?" दूसरा आदमी जवाब देता है—"देश को, गांव को, हमको, सुधारने के लिए आयी हैं।" विचार सुनने के पहले ही समझ जाते हैं कि ये अमीर-गरीब दोनों को प्रेम से जीने का रास्ता बताने आयी हैं, सब एक सुर में कैसे रहें यही समझाने आयी हैं।

देश की, दुनिया की खबरें यहाँ के कोने-कोने में पड़ी हुई बहनों को कहाँ मालूम? बहनों को न तो दुनिया का ज्ञान है, न देश का हाल मालूम है। लेकिन गांव का हाल तो सबको मालूम है। और इसीलिए चाहती हैं—गांव से गरीबी मिट जाय, सुख-शान्ति से गांव में लोग निवास कर सकें।

सत्ता और सम्पत्ति को लेकर राष्ट्र-राष्ट्र में झगड़ा, गांव-गांव में झगड़ा और उसने घर को भी छोड़ा नहीं। एक गांव में एक धोबिन जो ६० वर्ष की होगी, रोती हुई हमारे पास आयी, कहने लगी—"मेरी बहुरिया मुझे मानती नहीं। वह मेरा घर है, लेकिन मुझे पूछे बगैर वह सामान लेती है! मैं उसकी सास हूँ, इसलिए उसे मेरी बात माननी चाहिए कि नहीं? वह कहती है, मेरा भी तो यह घर है, इसलिए मैं तुमको क्यों पूछूँ? क्यों मानूँ?" बेचारी धोबिन को समझ में नहीं आ रहा था कि उसका यह झगड़ा क्यों है? जब उसे समझाया कि तुम्हारा झगड़ा वास्तव में बहू के साथ नहीं है, झगड़े का कारण है अधिकार और सम्पत्ति। धोबिन को बात समझने में देर न लगी, वह कहने लगी—"तब तो कल ही मैं सब कुछ बहुरिया को सौंप दूँगी। सचमुच, इतने से हमारा झगड़ा खतम हो जायेगा।"

× × × ×

गांव में प्रेम, शान्ति तथा सुख बढ़ाने के लिए क्या करना होगा, इस पर चर्चा चल रही थी। भूमि की व्यक्तिगत मालकियत छोड़ने से संगठन होगा, दुःख बँटेगा और सुख भी बढ़ेगा। लोग हमारी बातें बड़ी ध्यान से सुन रहे थे। उनके चेहरे के भाव बता रहे थे कि वे हमारी बातें समझ रहे हैं। हमारे साथी के पास ग्रामदान का फार्म था। लोग हस्ताक्षर करने लगे। इतने में मैंने देखा। एक बहन अपने पति को खींच रही थी, वह बोल रही थी—"चलो, तुम भी सही कर दो; मालकियत छोड़ दो, सब लोग सही कर रहे हैं, तुम क्यों दूर हो?" दूसरे कुछ लोग बोल रहे थे—"हम गरीब अगर गरीबों को मदद करने लग जायंगे तो दुःख मिटेगा ही।"

× × ×

सरगुजा की आदिवासी बहन राजमोहिनी देवी, जिन्होंने यहाँ के आदिवासी भाई-बहनों के दिल में अलख जगाया, उनके आश्रम में हमारा पड़ाव था। पत्थरों के एक छोटे-से टीले पर उनका आश्रम है, छोटी-छोटी दस-पाँच झोपड़ियाँ, जिनमें मिलने वाले भक्तगण ठहरते हैं। ६०-६५ साल उम्र की वह बहन बारिश के दिनों में खेती करके अपनी आवश्यक चीजें खुद पैदा करती है और बाकी समय आदिवासी भाई-बहनों को शिक्षण देती हुई घूमती हैं। जो आदिवासी बहन पति से कभी अलग होना नहीं चाहती है, वैसी बहन ने पति को छोड़ा, बाल-बच्चों को छोड़ा, वानप्रस्थाश्रम को स्वीकार करके समाज-सेवा में लगी है। एक क्षण में उसके जीवन में क्रान्ति हुई और आगे वही क्रान्तिकारी सामाजिक क्रान्ति के लिए दर-दर घूम रही है।

× × ×

एक गांव में कुएं के पास कुछ बहनें मिलीं। कोई उबाले हुए साल के बीज धोने को आयी थीं और कोई पीपल के पत्ते उबालकर लायी थीं। उनसे पूछने पर पता चला कि दोपहर को वही आहार वे लोग करेंगे। फिर पूछा, शाम को क्या खाओगे? "शाम को क्या खायंगे, हमें ही मालूम नहीं! साल का बीज भी ज्यादा गिरता नहीं।" जिनका पेट दोपहर को तो जैसे-तैसे भरेगा, लेकिन फिर शाम के लिए उनके सामने वही सवाल खड़ा है, ऐसे लोगों को भी अपनी हालत बताते समय हमने उनकी रोती सूरत नहीं देखी, अपनी गरीबी का वर्णन और उसके साथ-साथ हँसी, दोनों का मेल बठाना भौतिकवाद के पीछे दौड़नेवालों को मुश्किल जायेगा। लेकिन यहाँ की भूमि में जो अध्यात्म पड़ा हुआ है, उसी के कारण वे दुःख को भी हँसकर ही झेलते हैं। —लक्ष्मी

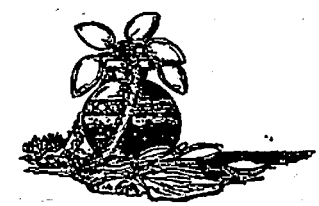

www.vinoba.in

बैंगन की कीड़ों से रक्षा

कीड़ों से बहुत अधिक हानि होने की वजह से कभी-कभी बैंगन की पैदावार ५० प्रतिशत तक कम हो जाती है। पैदावार के अलावा इसके गुणों में भी कमी पायी गयी है। आधुनिक कीटनाशक दवाओं के प्रयोग से इसकी पैदावार में काफी वृद्धि हो सकती है। जोतवानी तथा सरूप प्रकाश के प्रयोगों के आधार पर सेविन नामक कीट-नाशक दवा के प्रयोग से २,७८८ किलो० बैंगन प्रति हेक्टेयर अधिक पैदा हुआ।

बैंगन की फसल को नुकसान पहुँचानेवाले कीड़ों के नाम इस प्रकार हैं :

(१) बैंगन की छोटी पंखवाली मक्खी, (२) कपास का फुदका, (३) बैंगन का माहू कीट, (४) बैंगन का फल व शाखा-छेदक, (५) बैंगन का तना-छेदक, (६) बैंगन का इपीलैचना भृंग, और (७) बैंगन का उड़नेवाला भृंग।

इन कीड़ों में सबसे अधिक नुकसान फल व शाखा-छेदक कीड़ों से होता है। इपीलैचना जाति के कीड़े, कपास का फुदका तथा बैंगन का माहू कीट भी फसल को काफी हानि पहुँचाते हैं।

कुछ मुख्य कीड़ों की पहचान तथा उनके जीवन-चक्र का संक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है :—

बैंगन का फल व शाखा-छेदक कीड़ा : इस कीड़े की सूण्डी (गिडार) पौधों की मुख्य शाखा में छेद करके उसे काट देती है। इससे पौधे की मुख्य शाखा सूख जाती है तथा पौधे की बढ़वार रुक जाती है। जब पौधों पर फल लगते हैं तो यह फलों में छेद करके अन्दर घुस जाती है। अन्दर घुसकर यह फल के गूदे को खाती है, जिससे फल सड़ जाते हैं।

वयस्क सूण्डी की लम्बाई करीब १५ मिलीमीटर होती है। इसका रंग गुलाबी होता है। पतंग के पंख २० मिलीमीटर से कुछ अधिक लम्बे होते हैं। यह भूरे रंग का होता है। दोनों जोड़ी पंख सफेद होते हैं और अगले पंखों पर गुलाबी धारियाँ होती हैं।

जीवन-चक्र : मादा कीड़ा (मौथ) पत्ती को निचली सतह पर या फल पर अंडे देती है। अंडे फूटने पर उससे सूण्डी निकलती है। सूण्डी फल या शाखा के अन्दर घुस जाती है तथा बाद में प्यूपा में बदल जाती है। इससे पतंगा निकलता है।

इपीलैचना जाति के कीड़े : पहचान : यह कीड़ा छोटा व गोल आकृति का होता है। इसका रंग लाल होता है तथा ऊपर काले गोल धब्बे होते हैं। ये केवल पत्ती या कभी-कभी फल भी खाते हैं। ये कीड़े पत्ती में छेद नहीं करते।

जीवन-चक्र : मादा कीड़ा पत्तियों की निचली सतह पर समूह में अंडे देती है। अंडे पीले रंग के होते हैं, जिनके फूटने पर पीले रंग की सूण्डी निकलती हैं। प्यूपा पत्ती पर पलता है। इससे बाद में प्रौढ़ कीड़े बनते हैं। जुलाई से अक्तूबर तक इसका आक्रमण अधिक होता है।

बैंगन का उड़नेवाला भृंग : इसका वयस्क कीड़ा चमकीले नीले रंग का होता है। यह पत्ती को जगह-जगह काटकर उसमें छेद बना देता है।

बैंगन का माहू कीट : ये कीड़े झुण्डों में बैंगन की पत्ती की निचली सतह पर पाये जाते हैं। इनका आकार सरसों के माहू कीड़े से बड़ा तथा रंग कुछ काला-सा होता है। ये पत्ती का रस चूसते हैं।

कपास का फुदका : ये कीड़े हल्के हरे रंग के होते हैं। सुबह के समय ये शान्त पड़े रहते हैं। इन्हें पत्तियों की निचली सतह पर देखा जा सकता है।

बैंगन का तना-छेदक कीड़ा : यह कीड़ा भूरे रंग का होता है। सूण्डी केवल तने में छेद बनाकर उसे अन्दर ही खाती रहती है।

रोकथाम

(१) गोल किस्म की अपेक्षा इन कीड़ों का बैंगन की पूसा पर्पल लौंग किस्म पर आक्रमण होता है। इसलिए इन कीड़ों से बचने के लिए पूसा पर्पल लौंग किस्म ही उगानी चाहिए।

(२) नाइट्रोजनधारी उर्वरकों को कम मात्रा में तथा फास्फोरस व पोटाशधारी उर्वरक को अधिक मात्रा में देना चाहिए।

(३) आलू तथा बैंगन का फसल-चक्र न अपनाया जाय।

(४) जिनमें रोग लगे हों, ऐसी शाखाओं तथा फलों को तोड़कर नष्ट कर देना चाहिए।

(५) ०.२५ प्रतिशत की शक्ति की सेविन नामक कीट-नाशक दवा का पानी में घोल तैयार कर पौधों पर छिड़काव करना चाहिए। इसका पहला छिड़काव पौध लगाने के करीब ८ दिन बाद, दूसरा छिड़काव फल आने के समय तथा तीसरा छिड़काव दूसरे छिड़काव के करीब १७ दिन बाद करना चाहिए। यह कीटनाशक दवा बैंगन के सभी कीड़ों को नष्ट करने में बहुत→

www.vinoba.in

चुनाव में एकता पराजित हो गयी

हरिकिशुन का नारदमोह खतम हो गया। ग्रामसभा के अध्यक्ष की बात को लेकर गाँव में जो तनातनी पैदा हो रही थी, वह भी समाप्त हो गयी। सबने कहा, "भगवान पर भरोसा रखकर हमें एक-दूसरे के हाथ में हाथ मिलाकर अब आगे बढ़ना है। बलिराम पांडे को सबका दिल जोड़कर एकसाथ ले चलने में अगुवाई करनी है।" बलिराम पांडे को हारकर उस दिन जब सबकी बात माननी ही पड़ी, और ग्रामसभा का अध्यक्ष बनना पड़ा, तो अंत में सबके सामने हाथ जोड़कर बोले, "पंचों के रूप में आप लोग हमारे 'परमेशर' हैं। आपने मुझ पर एक साथ भरोसा करके मेरे कमजोर कंधे पर एक बहुत भारी बोझ लाद दिया है। अब इस बोझ को सम्भालकर ले चलने की ताकत भी आप ही लोगों को देनी है। गाँव के छोटे-बड़े सबने मुझे अपना माना है तो भाइयों, मैं भी आप लोगों के सामने यानी 'परमेशर' के दरबार में यह संकल्प करता हूँ कि गैर किसीको नहीं समझूँगा। अबतक एक छोटे परिवार का सदस्य था, अपना दुख-सुख अपने घर के आंगन तक ही सिमटा था, आज से पूरा गाँव अपने घर का आंगन और गाँव के सभी लोग अपने परिवार के।...लेकिन आदमी हूँ। आदमी से भूल होती ही है। इसीलिए मैं आप सबसे इसी समय प्रार्थना कर देना चाहता हूँ कि अगर मुझसे कोई गलती हो जाय तो अपने परिवार के सदस्य की तरह ही मुझे समय पर चेतावनी देने, और जरूरत पड़े तो डाँटने-डपटने में भी आप लोग हिचकियेगा नहीं, तभी यह जिम्मेदारी मैं निभा पाऊँगा।"

बलिराम पांडे की यह बात सबके दिल को छू गयी थी। गाँव में एकता की ऐसी भावना भर गयी थी जैसी कि पहले कभी किसीने कल्पना भी नहीं की थी। सचमुच गाँव के लोग यह महसूस करने लगे थे कि वे एक बड़े परिवार के सदस्य हैं। निजी परिवारों में भी पहले से अधिक प्रेमभाव पैदा हो गया था। पूरे गाँव की हवा में ही पारिवारिकता का प्यार बस गया था।

लेकिन सिर मुड़ाते ही ओले पड़े। इस एकता और पारिवारिकता के धागे को तोड़ने और उस धागे से सबको उलझाने का जाल बुनने के लिए आ गया यह मध्यावधि चुनाव।

बलिराम पांडे ने इस चुनाव के खतरे से गाँव की एकता और पारिवारिकता को बचाने के लिए एड़ी-चोटी का पसीना एक कर दिया, लेकिन गाँव को होश तब हुआ जब 'चिड़ियाँ चुग गयीं खेत!'

श्रीपालपुर के रामधनी बाबू और बलिराम पांडे ने कोशिश करके एक दिन क्षेत्र के सभी उम्मीदवारों की एक सभा बुलायी। सबके लिए एक बड़ा-सा मंच बनाया गया। इलाके भर में प्रचार किया गया कि सभी उम्मीदवार एक ही सभा में एक ही मंच से मतदाता-जनता को अपनी बातें बतायेंगे। जनता ने यह तमाशा तो कभी देखा नहीं था, इसलिए खूब भीड़ लगी। सबके लिए १५-१५ मिनट का समय तय किया गया। पर्ची डालकर कौन किसके बाद बोलेगा, यह सिलसिला तय हुआ। और लगभग तीन घंटे तक चुनाव का यह मजेदार नाटक चलता रहा। जनता को खूब मजा आया। सभा के अंत में रामधनी बाबू ने उम्मीदवारों से हाथ जोड़कर निवेदन किया, "अब इस इलाके की जनता ने आप सबकी बातें सुन लीं, जिसे वोट देना चाहेगी, देगी, अब भगवान के नाम पर कलह की आग लगाने-वाले चुनाव के हथकण्डे आप लोग इन गाँवों में आजमाने की कृपा नहीं कीजिएगा, यही हम लोगों का आप सबसे निवेदन है। चुनाव के बाद तो आप हमारी भलाई का काम करेंगे ही, लेकिन इतनी भलाई तो चुनाव के पहले भी कर सकते हैं।" रामधनी बाबू की बात पर सबने ताली बजायी और सभा समाप्त हो गयी।

करीब एक सप्ताह तक तो ऐसा लगा कि सचमुच इस बार का चुनाव बहुत सभ्य ढंग से बिना लड़ाई-झगड़े के निपट

कारगर साबित हुई है। एक हैक्टेयर में कितनी मात्रा में यह दवा छिड़की जाय यह पौधों को बढ़वार पर निर्भर करता है। यह मात्रा करीब ४०० से ६०० लिटर तक होनी चाहिए। पहले छिड़काव में दवा की मात्रा कम तथा तीसरे छिड़काव में ज्यादा होनी चाहिए।

अगर सेविन नामक कीटनाशक दवा प्राप्त न हो सके तो गामा बी० एच० सी० तथा डी० डी० टी० (१:१ में) के ०.०५ प्रतिशत की शक्ति के घोल का छिड़काव ऊपर बतायी गयी सेविन कीटनाशक दवा की घोल की तरह तीन बार करना चाहिए।

छिड़काव किये गये फलों को बाजार में भेजने से पहले धो लेना चाहिए। कारण, सभी कीटनाशक दवाएँ मनुष्य के लिए जहरीली होती हैं। वैसे यह ध्यान रखना चाहिए कि छिड़काव करने के पहले फल तोड़ दिये जायँ।

—राजेन्द्र सिंह

("खेती" नवम्बर '६८ से साभार)

www.vinoba.in

जायगा। लेकिन जब चुनाव १० दिन रह गया तो इस आशा पर पानी फिर गया। उम्मीदवारों के सामने समस्या थी कि इन गाँवों का 'वोट' किसको मिलेगा, यह तो पता ही नहीं चलता। और इन्हीं गाँवों का वोट निर्णायक साबित हो रहा था। इसलिए यह अंदाज लगाने की कोशिशें शुरू हुईं।

कहते हैं कि कलियुग राजा नल के नाखून में से घुस गया था। चुनाव का संघर्ष इस 'अंदाज' लगाने की कोशिश में से गांव में पैठ गया।

पहले गाँव में पार्टियों के झण्डे लोगों के दरवाजे पर एक-एक कर लहराने लगे। 'अमुक' के यहाँ 'अमुक' पार्टी का झण्डा लग गया तो हम क्यों पीछे रहें?...हम भी...और इस प्रकार खींचतान शुरू हुई। पहले तो रिश्ते-नाते जोड़कर वोट माँगे जाने लगे। फिर रिश्ते-नाते तोड़कर वोट मांगने का दौर चला। कूटनीति की पुरानी चालें आजमायी गयीं। साम, दाम, दण्ड, भेद, सब तरीके आजमाये गये। जाति-बिरादरी की जय बोली गयी। कोटा, परमिट, ठीका आदि के सुनहले सपने दिखाये गये। पूरा गांव अखाड़ा बन गया। 'एकता' और 'पारिवारिकता' गायब हो गयी, सबके सब एक-दूसरे के दुश्मन हो गये।

...और यह सब कर गुजरने के बाद चुनाव-दंगल पूरा हुआ। चुनाव में खड़े हार जानेवाले उम्मीदवारों के दिल बैठ गये। आँखों से गंगा-यमुना की धारा बहने लगी। जो चुन लिये गये, उनकी जय-जयकार से आसमान गूँज उठा।

इस दंगल में सबसे बढ़चढ़कर भाग लिया हरिकिशुन ने। शुरुआत भी उसने ही की थी। अफवाह थी कि इलाके के सबसे बड़े आदमी—जो 'अमुक दल' से चुनाव लड़ रहे हैं—ने हरिकिशुन को पूरे पाँच बीघे का पट्टा लिख देने का वादा किया है। बात भी सच थी। इलाके भर के लोग यह जानते थे कि हरिकिशुन बड़े काम का 'बिकाऊ' आदमी है। और इस बार गांव में 'एकता' हो जाने के कारण उसकी दर बढ़ गयी है। इसलिए इसे कोई 'बड़ा' आदमी ही इस बार खरीद सकेगा। हरिकिशुन ने भी सौदा पटाने में भरपूर ऐंठने की कोशिश की। ५ बीघे की शर्त तो जीत जाने पर थी।...लेकिन इस बार हरिकिशुन धोखा खा गया। चुन जाने के बाद 'नेताजी' का दरवाजा उसके लिए बन्द हो गया था।

संस्मरण

'गांधी मर गया'

हम सबको मृत्यु का बड़ा भय लगता है। लेकिन जीवन और मरण, दोनों ईश्वर की बड़ी देन है। दिन और रात, दोनों में बड़ा आनन्द है। दिन में सूरज दीखता है, तो रात में चाँद और असंख्य तारों की शोभा दीखती हैं। अमावस्या और पूर्णिमा दोनों की वन्दना करनी चाहिए। छोटा बच्चा माँ के दोनों स्तनों से भरपेट दूध पीता है। जीवन और मरण, जगत्-माता के दो स्तन ही हैं। दोनों में आनन्द है।

महात्माजी मरण को भी ईश्वर की कृपा मानते थे। वे कई बार अपने उपवास के समय कहा करते थे कि 'मर जाऊं तो भी ईश्वर की कृपा ही मानिए।' सन् १९१६-१७ की बात है। बिहार के चम्पारण जिले में महात्माजी किसानों का आन्दोलन चला रहे थे। गोरे जमींदार सरकार की मदद से भारी जुल्म करते थे। एक बार एक जवान किसान लाठी की मार से सिर फूट जाने से मर गया। उसकी माँ बूढ़ी थी। उसका वह इकलौता बेटा था। उस माँ के दुःख की सीमा नहीं थी। वह महात्माजी के पास आकर बोली: 'मेरा इकलौता बच्चा चला गया। उसे किसी तरह जिला दीजिए।' गांधीजी क्या कर सकते थे? गम्भीर होकर बोले: 'माँ, मैं तुम्हारे बच्चे को कैसे जीवित करूं? मेरी ऐसी शक्ति कहाँ? और वैसा करना ठीक भी नहीं है। मैं उसके बदले में तुम्हें दूसरा बच्चा दूं?'

यह कहकर महात्माजी ने उस बूढ़ी माँ के काँपते हाथ अपने सिर पर रख लिये और आँसू सम्भालते हुए उस माता से कहा: 'लो, लाठी-चार्ज में गांधी मर गया। तुम्हारा लड़का जिन्दा है और वह तुम्हारे सामने खड़ा है, तुम्हारा आशीर्वाद माँग रहा है।'

उस माँ के आँसू रोके न रुकते थे। उसने बापू को अपने पास खींच लिया। उनका सिर अपनी गोद में लेकर 'मेरा बापू' बोलने लगी। उसने उन्हें प्रेमभरा आशीर्वाद दिया कि 'सौ साल जियो!'

—साने गुरुजी

'गाँव की बात': वार्षिक चन्दा: चार रुपये, एक प्रति: अठारह पैसे
सम्पादक: राममूर्ति: सर्व सेवा संघ-प्रकाशन, राजघाट, वाराणसी–१

www.vinoba.in